अष्टमस्थ दशमेश का विचार

डॉ. सुशील अग्रवाल

1. विषय प्रवेश

अर्थ त्रिकोण (II, VI, X) की धुरी होने के साथ–साथ दशम भाव सबसे सशक्त केन्द्र भाव है। जातक के कर्म, आजीविका आदि इसी भाव का कारकत्व होने के कारण दशमेश का आकलन अति महत्वपूर्ण है। इस लेख में दशमेश के अष्टम भावगत होने पर सम्यक विचार किया गया है।

साधारणतः कहा जाता है कि यदि दशमेश अष्टमस्थ हो तो जातक अनैतिक स्रोत से धन प्राप्त करता है या अघोषित धन संग्रह करता है। ऐसा भी कहा जाता है कि यदि दशमेश अष्टमस्थ हो तो जातक को जीवनपर्यंत आजीविका संबंधित संघर्ष करना पड़ता है। जातक यदि व्यापार में हो तो उसे उतार–चढ़ाव का सामना करना पड़ता है। जातक यदि नौकरीपेशा हो तो उसका बार–बार स्थानांतरण होता है या अधिकारियों से अनबन के कारण उसकी नौकरी में अस्थिरता बनी रहती है। ऐसा भी कहा जाता है कि दशमेश के अष्टमस्थ होने से जातक एक से अधिक कार्य करता है, जैसे दो व्यवसाय करना या नौकरी के साथ–साथ अतिरिक्त कार्य करना।

अष्टम भाव रहस्यमय है जिसमें सब छिपा रहता है और दशमेश एक महत्वपूर्ण भावेश। साधारणतया दशमेश की अष्टमस्थ स्थिति को अशुभ फलप्रद माना जाता है इसीलिए दशमेश के अष्टमस्थ होने के विषय पर साहित्यिक सर्वेक्षण एवं उदाहरणों द्वारा सम्यक विचार करने के पश्चात किसी निष्कर्ष पर पहुँचने का प्रयास किया जाएगा।

2. साहित्यिक सर्वेक्षण

बृपाहोशा, भावेशफलाध्यायः, श्लोक 116 : यदि दशमेश 8 वें में हो तो जातक कर्महीन, दीर्घायु और परनिन्दक होता है।

फलदीपिका, भावचिन्ता, श्लोक 5: जिस भाव का विचार करना हो, उस भाव का स्वामी यदि लग्न से 6, 8, 12 में बैठा हो तो उस भाव को बिगाड़ता है।

उत्तर कालामृत, अध्याय 4, श्लोक 14 में कुछ अधिक विस्तार है: जिस भाव का स्वामी 6, 8, 12 में गया हो उस भाव को हानि होती है। जिस भाव में षष्ठेश, अष्टमेश अथवा द्वादशेश बैठ जाए उसको तथा जिस भाव को यह देखें उसको भी हानि होती है। इसी श्लोक में कुछ अपवाद भी हैं :

- शुक्र द्वादश में, बुध अष्टम में तथा गुरु छठे भाव में सुख प्रदान करते हैं।
- छठे, आठवें तथा बारहवें भाव में पड़े ग्रह यदि अपने मित्र की अथवा अपनी उच्च राशि में स्थित हों तो (उन भावों के लिए जिनके वे स्वामी हों) शुभ फलदायक हो जाते हैं।
- यदि 6, 8, 12 भावों के स्वामी शत्रु, नीच, अस्त तथा युद्ध में पराजित हों तो जो ग्रह इन भावों में (6, 8, 12 वें) दूसरे भावों के स्वामी होकर आये हों वे शुभ फल करने वाले होते हैं।

फलदीपिका, भावचिन्ता अध्याय : विचारणीय भाव से यदि तीसरे, छठे, ग्यारहवें भाव में पाप ग्रह हों तो वे अपनी–अपनी दशा में विचारणीय भाव सम्बंधित सुख प्रदान करते हैं।

3. भावों के कारकत्व

प्रचलित ज्योतिषीय शास्त्रों द्वारा वर्णित अष्टम भाव के कारकत्व अधिकतर अशुभ ही हैं : आयु, मृत्यु या मृत्यु का डर, मृत्यु के कारण, झगड़ा, भार्या का शारीरिक कष्ट, मानसिक क्लेश, आलस्य, राजा का दंड, वस्तुओं का नाश, दुर्घटना, आकस्मिक घटना, क्रूर कर्म, लगातार कष्ट आदि।

4. ग्रहों का नैसर्गिक प्रभाव

ज्योतिष में सभी ग्रह अपना सामान्य एवं स्वभाववश (नैसर्गिक) फल प्रदान करते हैं। अर्थात, ग्रह बलाबल अनुसार नैसर्गिक फल के साथ–साथ भावेश सम्बंधित फल भी अवश्य देंगे। अष्टम में विभिन्न ग्रहों की स्थिति का नैसर्गिक प्रभाव निम्न बताया गया है :

– **सूर्य** : सारावली – चंचल नेत्र वाला या हीन दृष्टि वाला, धन व सुख से रहित, अल्पायु तथा अपने इष्ट जनों के वियोग से दुःखी होता है। फलदीपिका – यदि अष्टम में

सूर्य हो तो धन, आयु, मित्र और नेत्र ज्योति अल्प/नष्ट हो।

नोट : वृश्चिक लग्न में सूर्य दशमेश होकर मिथुन राशि में अष्टमस्थ होंगे। जातक के मान–सम्मान को ठेस पहुँच सकती है, पिता से संबंध खराब हो सकते हैं या जातक सरकारी खुफिया विभाग या अनुसंधान से सम्बंधित हो सकता है।

– **चन्द्र** : सारावली – जातक अधिक बुद्धिमान, बड़ा तेजवान, कृश देहधारी और अगर क्षीण चन्द्रमा हो तो अल्पायु होता है। फलदीपिका – यदि अष्टम में चन्द्र हो तो जातक रोगी और अल्पायु होता है।

नोट : तुला लग्न में चन्द्र दशमेश होकर वृषभ राशि में अष्टमस्थ होंगे जो कि उनकी उच्च स्थिति है। उतार–चढ़ाव के बावजूद जातक मानसिक संतुलन बनाये रखने में सक्षम होगा। माता का सहयोग रहेगा और चिकित्सा सम्बंधित क्षेत्र में कार्यरत हो सकता है।

– **मंगल** : सारावली – जातक रोगी, अल्पायु, कुत्सित देहधारी, दूषित कार्य कर्ता तथा शोक से दुःखी होता है। फलदीपिका – अष्टम में मंगल होने से जातक असुन्दर शरीर वाला, धनहीन और अल्पायु होता है।

नोट : कर्क लग्न में मंगल दशमेश एवं योगकारक होकर कुम्भ राशि में अष्टमस्थ होंगे। कुम्भ लग्न में मंगल दशमेश होकर कन्या लग्न में अष्टमस्थ होंगे जो कि उनकी शत्रु राशि है।

– **बुध** : सारावली – जातक प्रसिद्ध नाम वाला, दीर्घायु, राजा के समान व न्यायाधीश होता है। फलदीपिका – यदि अष्टम में बुध हो तो जातक दण्ड नेता, बहुत विख्यात, दीर्घायु, अपने कुल का पालनकर्ता और श्रेष्ठ होता है।

नोट : कन्या लग्न में बुध लग्नेश एवं दशमेश होकर मेष राशि में अष्टमस्थ होंगे। यह स्थिति अष्टम भाव को बल प्रदान करेगी। जातक सलाहकार आदि हो सकता है और वह सम्प्रेषण (communication) में निपुण होगा। धनु लग्न में बुध दशमेश होकर कर्क राशि में अष्टमस्थ होंगे। जातक कार्य में भावुक होगा और सहजज्ञ (intuitive) होगा।

– **गुरु** : सारावली – जातक पीड़ित, दीर्घायु, वेतन से जीने वाला, दास, अपने जनों का भृत्य, दीन, मलिन तथा स्त्री भोगी होता है। फलदीपिका – अष्टम में गुरु होने से जातक दीन, नौकरी से धनार्जन करने वाला परन्तु दीर्घायु होता है।

नोट : मीन लग्न में गुरु लग्नेश एवं दशमेश होकर तुला राशि में अष्टमस्थ होंगे। यह स्थिति अष्टम भाव को बल प्रदान करेगी परन्तु तुला गुरु की शत्रु राशि है। जातक की वाणी अच्छी होगी, धार्मिकता में कमी होगी, वैवाहिक झगडे आदि सुलझाने में अच्छा सलाहकार होगा और ज्योतिष आदि विषयों में रुचि होगी। मिथुन लग्न में गुरु दशमेश होकर अष्टम में मकर राशि में होंगे जो उनकी नीच राशि है। गुरु के नैसर्गिक फल न्यून होंगे परन्तु वाणी से दूसरों को प्रभावित करने की क्षमता रहेगी।

– **शुक्र** : सारावली – जातक दीर्घायु, अद्वितीय सुखी, धन से संपन्न, राजा के समान व् क्षण–क्षण में संतोष प्राप्त करने वाला होता है। फलदीपिका – यदि शुक्र अष्टम भावगत हो तो जातक धनी, दीर्घायु और भूमिपति होता है।

नोट : सिंह लग्न में शुक्र दशमेश होकर अपनी उच्च राशि मीन में होंगे। बैंक और आर्थिक क्षेत्र से सम्बंधित आजीविका हो सकती है। जीवन साथी से सहायता मिलेगी। मकर लग्न में शुक्र योगकारक होकर सिंह राशि में अष्टमस्थ होंगे जो उनकी शत्रु राशि भी है। सरकार या बॉस संबंधित शुभाशुभ फल अचानक ही मिलते रहेंगे।

– **शनि** : सारावली – रोग से दुःखी, अल्पायु व समस्त कार्यों से रहित होता है। फलदीपिका – यदि शनि अष्टमस्थ हो तो जातक मलिन, बवासीर से पीड़ित, क्रूर बुद्धि वाला, भूखा और मित्रों से अवहेलित होता है।

नोट : मेष लग्न में शनि दशमेश होकर वृश्चिक राशि में अष्टमस्थ होंगे जो उनकी शत्रु राशि भी है। जातक दीर्घायु होगा। वृषभ लग्न में शनि दशमेश होकर धनु राशि में अष्टमस्थ होंगे। जातक दीर्घायु होने के साथ धीरे–धीरे उन्नति करेगा।

5. उदाहरण

उदाहरण 1 : 25–मार्च–1965, 17:15 बजे, मिर्जापुर, उत्तर प्रदेश।

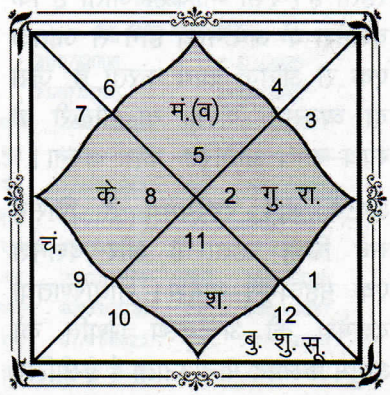

जातक लेखाधिकारी है। इनकी आजीविका बिलकुल भी सुचारु रूप से नहीं चली। बहुत सी नौकरियां बदलनी पड़ी और काफी वर्षों तक बिना नौकरी के भी रहे। शुक्र और बुध की अष्टम में स्थिति शुभ मानी गयी है परन्तु दशमेश शुक्र अष्टम में उच्चस्थ तो हैं परन्तु नवांश में नीचस्थ हैं, नीचस्थ बुध से युति है और लग्नेश सूर्य भी अष्टम में हैं जो नवांश में नीचस्थ हैं। गुरु दशम भावस्थ हैं परन्तु नवांश में गुरु भी नीचस्थ हैं। दशम पर गुरु के कुछ शुभ प्रभाव से और शुक्र के उच्च राशिस्थ होने से अवसर तो मिले परन्तु अन्य योगों से स्थिरता नहीं मिल पायी।

उदाहरण 2 : 02–अगस्त–1973, 18:35 बजे, इंदौर, मध्य प्रदेश।

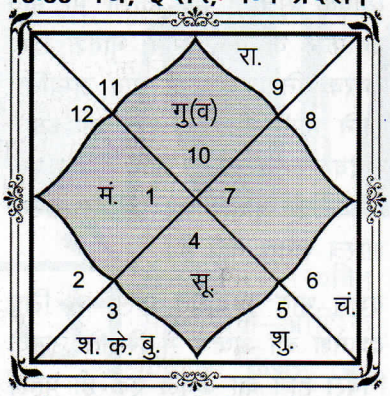

जातिका उच्च शिक्षित हैं परन्तु पति के बार–बार स्थानांतरण से आजीविका में नियमितता नहीं आयी। दो–तीन वर्ष पहले इन्होंने पति के साथ न जाने का निर्णय लिया और मुंबई में कार्य आरम्भ किया जिसका फल संतोषजनक है। दशमेश शुक्र की अष्टम में स्थिति शुभ है परन्तु शनि दृष्ट होकर नवांश में नीच राशिस्थ हैं। लग्न में गुरु नीचस्थ हैं जिससे उनका व्यक्तित्व स्वतन्त्र रूप से उभर नहीं पा रहा है। दशांश में दशमेश सूर्य दशम में स्वराशिस्थ हैं जिससे आजीविका सम्बंधित कार्य करने के लिए सदैव कोशिश करती रहती हैं।

उदाहरण 3 : अष्टम भाव का विचार हो और श्री अमिताभ बच्चन की कुंडली न हो तो कुछ अधूरा सा ही लगेगा।

11–अक्तूबर–1942, 16:00 बजे इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश।

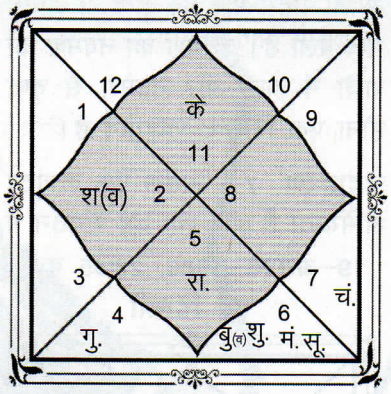

दशमेश के अष्टमस्थ होने के बावजूद जातक निःसंदेह कर्महीन न होकर अति कर्मशील है। नवमेश नीचभंग राजयोगी हैं एवं नवांश में स्वराशिस्थ हैं और नवमेश एवं दशमेश की युति विशिष्ट राजयोग है जो अष्टम में निर्मित हुआ है। उच्च एवं वर्गोत्तम गुरु ने कुंडली को अत्यंत बल प्रदान किया हुआ है।

जातक को बहुत से राजयोग मिले और फलित भी हुए परन्तु विषम परिस्थितियों में संघर्ष के साथ।

उदाहरण 4 : जातक एक यांत्रिक अभियन्ता है। जातक बहुत मेहनती है और इन्होंने नौकरी के साथ–साथ अतिरिक्त कार्य भी किया। वर्ष 1995 में भी कार्य सम्बंधित अचानक बहुत लाभ मिला। वर्ष 2000 में फैक्टरी की जमीन खरीदी और 2002 में केतु–बुध

27–अगस्त–1952, 15:30 बजे, नई दिल्ली।

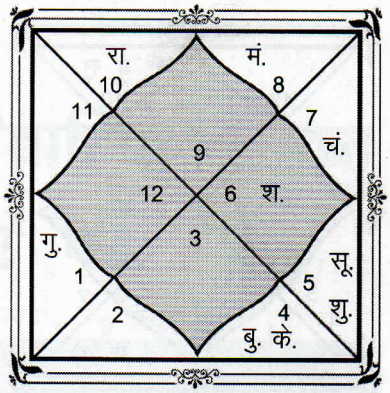

की दशा में अपनी फैक्टरी शुरू की। केतु और बुध दोनों ही बुध के नक्षत्र में स्थित हैं और केतु ने पूर्ण रूप से दशमेश के फल दिए। जातक के जीवन में आजीविका संबंधित बहुत उतार–चढ़ाव भी रहे। बुध ने दशमेश के अच्छे फल किये परन्तु सप्तम भाव के फल अच्छे नहीं रहे जिससे पत्नी के स्वास्थ्य पर अशुभ असर रहा क्योंकि सप्तमेश बुध सप्तम भाव के मारक स्थान में स्थित है। जातक की कुंडली में महाभाग्य योग है, लग्न बली है, जन्म नवांश और दशांश कुंडलियों के लग्न पर जन्म लग्नेश गुरु की दृष्टि है जिससे जातक को अतिरिक्त बल के साथ–साथ सुरक्षा कवच भी प्राप्त है। बुध की अष्टम में स्थिति उपरोक्त वर्णित शास्त्रीय सन्दर्भ में शुभ मानी गयी है।

उदाहरण 5 : जातक ने 21 वर्ष से ही सरकारी बैंक में कार्य शुरू किया, फिर त्याग पत्र देकर उच्च शिक्षा के लिए विदेश गए, कुछ वर्षों की नौकरी के पश्चात् शनि की महादशा के शुरू होते ही स्व व्यवसाय आरम्भ किया जो सफलता पूर्वक चल रहा है। जातक के एक से अधिक व्यवसाय हैं। शनि के प्रभाव से

12–फरवरी–1965, 07:30 बजे, आगरा, उत्तर प्रदेश।

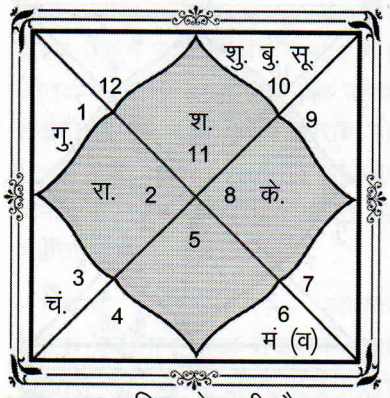

जातक अत्यधिक मेहनती है। अष्टम सम्बंधित उतार–चढ़ाव भी बहुत आये परन्तु संघर्ष करते हुए धीरे–धीरे उन्नति की। जातक की कुंडली में शश महापुरुष योग है, दशम पर लग्नेश की दृष्टि है, दशमेश मंगल पर अष्टमस्थ होने के अतिरिक्त कोई शुभाशुभ दृष्टि नहीं है और अष्टमेश द्वादश में होने से विपरीत राजयोग है। शश महापुरुष योग जातक को मेहनती, धनी, मुखिया आदि बनाता है। विपरीत राजयोग जातक में विपत्ति से दृढ़तापूर्ण सामना करने की क्षमता देता है।

उदाहरण 6 : 19–जनवरी–1985, 17:44 बजे, राजकोट, गुजरात।

जातक कम शिक्षित होने के बावजूद अपनी मेहनत एवं उत्कृष्ट सम्प्रेषण

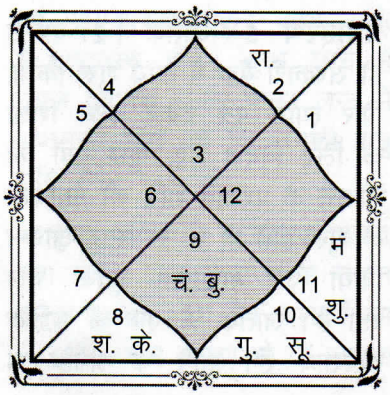

कौशल से एक बहुराष्ट्रीय संगठन में उच्च पद पर कार्यरत है। उन्हें अच्छा पारिवारिक वातावरण नहीं मिला, भाई–बहन ने पारिवारिक संपत्ति के कारण केस किया और पारिवारिक कठिनाई के कारण कम उम्र में शिक्षा छोड़ नौकरी करनी पड़ी। दशमेश गुरु अष्टमस्थ हैं परन्तु वर्गोत्तम हैं, तृतीयेश से युत होने से संघर्ष की क्षमता अधिक हुई और शनि की अपने अष्टम भाव पर दृष्टि से अष्टम भाव बली है। दशमेश का नवमेश की राशि में होना और नवमेश से दृष्ट होना एक विशिष्ट राजयोग है।

उदाहरण 7 : जातक एक कंप्यूटर अभियन्ता है और एक बड़े संगठन में

19–अगस्त–1986, 22:45 बजे, नई दिल्ली

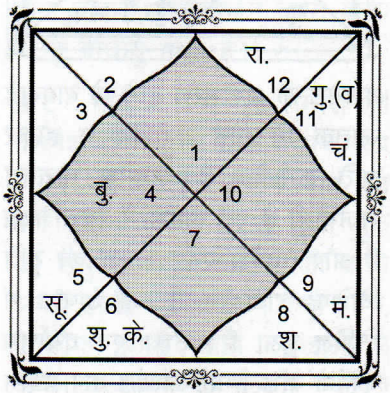

कार्यरत हैं। जातक 6–12 महीनों की अवधि की कार्य संबंधित परियोजनाओं के लिए विदेश भी जाते रहते हैं। दशमेश शनि अष्टमस्थ तो हैं परन्तु दशम को दृष्टि देकर दशम भाव को सशक्त कर रहे हैं। जन्म के दशमेश शनि का नवांश और दशांश में द्वादश की स्थिति विदेश सम्बन्ध भी स्पष्ट कर रही है। इसके अतिरिक्त लग्नेश का नवमस्थ होना और पंचमेश का स्वराशि होना भी शुभ है। नवांश के दशमेश नवांश लग्न में हैं और दशांश के दशमेश दशम में।

6. निष्कर्ष

सभी उदाहरणों में जातक के जीवन में उतार–चढ़ाव आये क्योंकि दशमेश की स्थिति लग्न से अष्टम में है।

साहित्यिक सर्वेक्षण में वर्णित सूत्र के अनुसार भावेश की भाव से स्थिति पर भी विचार किया जाता है। अष्टम भाव, दशम का एकादश (लाभ स्थान) है। अर्थात, दशमेश की स्थिति दशम भाव के लिए अशुभ नहीं है जब अन्य परिस्थितियाँ प्रतिकूल न हों।

बुध और शुक्र ने भी दशमेश होकर अष्टमगत होने पर दशम के शुभ फल दिए।

उत्तर कालामृत, अध्याय 4, श्लोक 12 में फलित का एक मौलिक एवं व्यापक सूत्र हैं कि किसी भी भाव के फल के लिए भाव, भावेश तथा कारक निर्बल हों तो भाव सम्बंधित हानि होती है। इस सूत्र का ध्यान सदैव रखना चाहिए और केवल एक घटक के आधार पर फलित करना शास्त्र संगत नहीं है।

दशम भाव सम्बंधित फलों के लिए दशमेश की अष्टम में स्थिति उसके निर्बल होने का केवल एक ही पहलू है। दशमेश का वर्गों में एवं अन्य बल, नैसर्गिक प्रभाव, दशम भाव एवं कारक का आकलन, दृष्टि, युति, राजयोग, अन्य योग, दशा आदि के अतिरिक्त लग्न, पंचम और नवम का आकलन करने से फलित में अधिक सटीक आती है। ❐

पता : सोम अपार्टमेंट्स,
बी–301, सेक्टर–6, प्लॉट–24,
द्वारका, नई दिल्ली–110075
दूरभाष : 9810162371